B.A (HONOURS) PART – 1
PHILOSOPHY – PAPER 2

Dr.Raj Narayan Singh

Department of philosophy

R.R.S College, Mokama

Patliputra University, Patna

अरस्तू का कारणता सिद्धांत

अरस्तू के द्रव्य विचार को सम्यक ढंग से समझने के लिए उनके कारण – नियम की व्याख्या आवश्यक है।

कारण क्या है ? अरस्तू कारण शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में करतें हैं। अरस्तू प्रयोजन(Reason) और कारण (Cause) में भेद करते हैं। प्रयोजन कारण से अधिक व्यापक है तथा प्रयोजन में कारण का अंतर्भाव हो जाता है। प्रयोजन युक्तिपूर्ण होता है, परंतु कारण की युक्ति का पता नहीं होता। उदाहणार्थ, मृत्यु का कारण बीमारी या दुर्घटना हो सकती है,परंतु इन कारणों से मृत्यु की व्याख्या नही हो पाती। अर्थात मृत्यु संसार में क्यों है, हम इन कारणों से नहीं जान पाते।

अरस्तू के कारणता सिद्धांत में कारण तथा प्रयोजन दोनों सम्मिलित हैं। इस व्यापक अर्थ में अरस्तू के अनुसार चार प्रकार के कारण हैं-

1.उपादान कारण (Meterial Cause)

किसी वस्तु का निर्माण जिस द्रव्य या उपादान से होता है, वह उस वस्तु का उपादान कारण है। जैसे- घड़े का उपादान मिट्टी है, पट का उपादान तन्तु है। इसे समवायि कारण भी कहतें हैं।

2.निमित्त कारण (Efficient Cause)

किसी कार्य की उत्पत्ति के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता होती है उसे निमित्त कारण कहते हैं। जैसे – कुम्भकार घट का निमित्त करता है।

3.स्वरूप कारण (Formal Cause)

यह किसी वस्तु का तत्व या सार है। किसी वस्तु का सार उसकी परिभाषा में व्यक्त होता है। इस तरह किसी वस्तु का स्वरूप कारण उस वस्तु का प्रत्यय या विज्ञान है। उदाहणार्थ, संगमरमर की प्रतिमा बनने के पूर्व प्रतिमा का स्वरूप या विज्ञान निर्माता के मस्तिष्क में विद्यमान रहता है। अतः मूर्ति का विज्ञान ही उसका स्वरूप कारण है।

4.लक्ष्य कारण (Final Cause)

जिस अंत या लक्ष्य को ध्यान में रखकर परिवर्तन किया जाता है,वही लक्ष्य कारण है। उदाहणार्थ संगमरमर की प्रतिमा में पूर्ण प्रतिमा ही लक्ष्य कारण है।

इस प्रकार अरस्तु ने आगे चलकर इन चार कारणों को दो रूपों में व्यक्त किया है क्योंकि अरस्तु निमित्त कारण , स्वरूप कारण और लक्ष्य कारण को एक ही मानते हैं।

1. द्रव्य (Matter)
2. आकार (Form)

****